Give us a Bread

I saw the man in the light of the setting twilight,
Hammering on the wooden fence stick-
One stroke, two strokes, strokes one after another,
The crazy middle-aged man was repeatedly
Looking at the red-yellow sun at the west sky-
The evening was setting in by the side of the bypass in a stormy speed,
Deep darkness is more darkened inside his heart.
Today also he wouldn't be able to finish all his works:
With the sound of the contractor, the crying heart
Seems to reach the throat and again get lost.

"Sir, I've not yet finished, please give me a hundred bucks
I'll buy wheat, sir I need to buy vegetables,
Eight stomachs are waiting at home,
Please give me a hundred rupees today".
It's not twilight anymore, dark new moon
Has smeared clouds of darkness on the sky of Bypass,
Bearing the tired body towards home,
Feels like one familiar dead body at the door.
"It was a sin for my children to be born on my land"
Shame,disgrace and fear in his indistinct voice,
"Is there not a single bread in my luck?"
The person wakes up before the sun rises
Leaves home in a rush,
He runs and crosses familiar lanes and streets.
Far, very far wants to go the mind and body-
Where the voices of the sons and daughters
Won't reach for sure.

Waking up, they will start shouting,
"Father, father,
Give us a bread father".

রুটি দাও

লোকটাকে দেখেছিলাম পড়ন্ত বিকেলের আলোয়
হাতুড়ি পিটিয়ে যাচ্ছে শাল-বল্লির গায়ে,
এক ঘা-দুই ঘা-ঘায়ের পর ঘায়ে
উন্মাদ মাঝবয়সের মানুষটি ফিরে ফিরে
পশ্চিমপারে লাল-হলুদ সূর্যের দিকে ফিরে দেখছিলো।
সন্ধ্যে নেমে আসছিলো ঝড়ের গতিতে বাইপাসের ধারে,
ঘন অন্ধকার অরো গাড়ো ওর মনের গভীরে।
আজও সব কাজ শেষ হবে না ওর,
কন্ট্রাক্টারের গাড়ীর শব্দে বুকের কান্না যেন
কণ্ঠনালীর ধার ঘেঁষে পথ হারায়।

"বাবু কাজ শেষ হয়নি আমার, একশো টাকা দাও
আটা কিনবো, সবজি কিনবো বাবু,
আটটা পেট বাড়ীতে,
বাবু একশোটা টাকা দাও আজ।"
পড়ন্ত বিকেল আর নেই এখন, ঘন অমাবস্যার
কালো মেঘে ঢেকে আছে বাইপাসের আকাশ,
বাড়ীর পথে ক্লান্ত শরীরটাকে বয়ে বেড়ানো,

যেন রোজকার একটাই চেনা শব দুয়ারে দাঁড়িয়ে।
"ছেলেমেয়েদের জন্মানোই পাপ হয়েছে আমার ভিটেতে"
অস্ফুট কণ্ঠস্বরে লজ্জা, ঘেন্না, ভয়।
"একটি রুটিও কি নসিবে নেই?"
সূর্যের আগে ঘুম থেকে উঠে পড়ে মানুষটা
দৌড়ে বেরিয়ে যায় ঘর ছেড়ে,
দৌড়ে দৌড়ে পেরিয়ে যায় চেনা পথ ঘাট এধোঁগলি
দূরে দূরে আরো দূরে যেতে চায় শরীর মন

रोटी दे !,

उस आदमी को मैंने,
ढलती शाम की धुंधली रौशनी में देखा था,
वह साल के पेड़ों पर हथौड़ा पिट रहा था।
एकबार,दो बार,बारबार पिट रहा था,
वह बावला अधेड़ उम्र का आदमी मुड़मुड़कर
पश्चिम प्रान्त के लाल-पीले सूरज को देख रहा था।
बाईपास के किनारे तेज़ गति से सांझ उतर रही थी।
घना अंधकार और भी गहन है
उसके अंतर में ,
आज भी तो उसके काम बाकी रह जाएंगे।
कांट्रेक्टर की गाड़ी की आवाज़ आते ही उसकी सिसक छाती से उठते हुए मानो गले के पास आकर भटक जाती है।
बाबूसाहब!काम ख़त्म नहीं हुआ,सौ रूपया दे दो।
आटे,सब्जियां खरीदूंगा! बाबूसाहब।
आठ पेट भूख से तरस रहे हैं,
बाबूसाहब सौ रूपए दे दो।
ढलती शाम और नहीं रही।
बाईपास के आसमान को घने अमावस के काले बादलों ने ढक लिया है।
थकेहारे शरीर को घर तक घसीटकर ले चलना,
मानों हर रोज चौकट पर एक ही शव खड़ा है,
“मेरे घर में बच्चों का जन्म लेना ही पाप है।"
कातर स्वरों में शर्म,घृणा और डर।
एक भी रोटी क्या नसीब नहीं होगी ?
सूरज उगने से पहले ही वह इंसान
घर छोड़कर निकल पड़ता है,
,सड़को ,मैदानों,गलियों
को पारकर भागते हुए आगे बढ़ जाना चाहता है,और दूर जाना चाहता है तन मन,
जहाँ बेटे बेटियों की आवाज़ नहीं पहुंचेगी।
आँखे खुलते ही वे चिल्लाएंगे,
“अब्बू,ओ अब्बू
एक रोटी दे दो अब्बू।”